https://doi.org/10.31995/an.2026.v17i01.022

माध्यमिक स्तर के विद्यालयीय पाठ्यक्रम में चित्रकला एवं शिल्पकला शिक्षा के समावेशन का राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण

डॉ मणि जोशी
एसोसिएट प्रोफेसर (बी.एड.)
श्री जय नारायण मिश्र पी.जी. कॉलेज, लखनऊ
ईमेलः drmanijoshi9@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:
Received: 22-05-26
Approved: 15-06-26

डॉ मणि जोशी

माध्यमिक स्तर के विद्यालयीय पाठ्यक्रम में चित्रकला एवं शिल्पकला शिक्षा के समावेशन का राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण

Artistic Narration 2026, Vol. XVII, No. 1, Article No.22 Pg.189-197

Online available at:
https://anubooks.com/journal-volume/artistic-narration-june-2026-vol-xvii-no1

Referred by:
DOI:*https://doi.org/10.31995/an.2026.v17i01.022*

सारांश

शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं है, बल्कि बालकों के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करना भी है। चित्र कला एवं शिल्प कला विद्यार्थियों के बौद्धिक, भावात्मक, सामाजिक तथा सृजनात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में जहाँ एक ओर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का महत्व बढ़ा है, वहीं दूसरी ओर कला–आधारित शिक्षा की आवश्यकता भी अनुभव की जा रही है। चित्र कला विद्यार्थियों को अपनी भावनाओं, विचारों एवं कल्पनाओं को अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान करती है, जबकि शिल्प कला उनके हाथों के कौशल, रचनात्मकता एवं कार्यकुशलता का विकास करती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 कला–एकीकृत अधिगम, अनुभवात्मक अधिगम तथा भारतीय ज्ञान एवं सांस्कृतिक परंपराओं के संरक्षण पर विशेष बल देती है। चित्र कला एवं शिल्प कला शिक्षा इन उद्देश्यों की पूर्ति में प्रभावी भूमिका निभाती है। माध्यमिक स्तर पर इन कलाओं का अध्ययन विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, सहयोग, समस्या–समाधान क्षमता, पर्यावरणीय जागरूकता तथा सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति सम्मान विकसित करता है। साथ ही, यह उन्हें स्थानीय कला एवं शिल्प परंपराओं से जोड़कर आत्मनिर्भरता एवं व्यावसायिक कौशलों के विकास में भी सहायक सिद्ध होती है।

प्रस्तुत अध्ययन में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में माध्यमिक स्तर के विद्यालयीय पाठ्यक्रम में चित्र कला एवं शिल्प कला शिक्षा के समावेशन की आवश्यकता, औचित्य, शैक्षिक निहितार्थ तथा चुनौतियों का विश्लेषण किया गया है। कला शिक्षा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का महत्वपूर्ण माध्यम है तथा इसे विद्यालयी पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग बनाया जाना चाहिए। प्रभावी शिक्षक प्रशिक्षण, पर्याप्त संसाधनों की उपलब्धता तथा कला–एकीकृत शिक्षण पद्धतियों के माध्यम से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों को सफलतापूर्वक प्राप्त किया जा सकता है।

मुख्य शब्द

चित्र कला, शिल्प कला, कला शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, कला–एकीकृत अधिगम, सृजनात्मकता, भारतीय संस्कृति, सर्वांगीण विकास, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020।

डॉ मणि जोशी

प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक विकास की आधारशिला होती है। बदलते वैश्विक परिदृश्य में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का समग्र विकास करना भी है। चित्र कला एवं शिल्प कला मानव की रचनात्मक अभिव्यक्ति के प्रभावी माध्यम हैं। चित्र कला के माध्यम से व्यक्ति अपने विचारों, भावनाओं तथा अनुभवों को रंगों, रेखाओं और आकृतियों के द्वारा व्यक्त करता है, जबकि शिल्प कला विभिन्न सामग्रियों का उपयोग करके उपयोगी एवं कलात्मक वस्तुओं के निर्माण की कला है। ये दोनों कलाएँ विद्यार्थियों में कल्पनाशीलता, सौंदर्यबोध, सृजनात्मकता तथा आत्म–अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास करती हैं। विशेष रूप से माध्यमिक स्तर पर, जब विद्यार्थियों के बौद्धिक, भावनात्मक एवं सामाजिक विकास की प्रक्रिया तीव्र गति से होती है, तब कला शिक्षा उनके व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कला–एकीकृत अधिगम को शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण अंग माना गया है। नीति के अनुसार कला केवल एक विषय नहीं, बल्कि अन्य विषयों के अधिगम को प्रभावी, रोचक एवं अनुभवात्मक बनाने का माध्यम है। चित्र कला एवं शिल्प कला के माध्यम से विद्यार्थियों में सहयोग, संप्रेषण, रचनात्मक चिंतन, पर्यावरणीय जागरूकता तथा सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति सम्मान विकसित किया जा सकता है। साथ ही, यह भारतीय कला एवं शिल्प परंपराओं के संरक्षण तथा संवर्धन में भी सहायक है।

आज के प्रतिस्पर्धात्मक एवं तकनीकी युग में विद्यार्थियों पर शैक्षणिक दबाव लगातार बढ़ रहा है, जिसके परिणामस्वरूप तनाव, चिंता तथा मानसिक असंतुलन जैसी समस्याएँ भी सामने आ रही हैं। चित्र कला एवं शिल्प कला विद्यार्थियों को आत्म–अभिव्यक्ति तथा मानसिक संतुलन का अवसर प्रदान करती हैं। ये कलाएँ मनोरंजन के साथ–साथ मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ बनाने में भी सहायक सिद्ध होती हैं। साथ ही, शिल्प कला विद्यार्थियों में कार्यकुशलता, श्रम के प्रति सम्मान तथा स्वरोजगार संबंधी कौशलों का विकास करती है, जो उन्हें भविष्य में रोजगारोन्मुखी अवसरों के लिए भी तैयार करती है।

अवधारणा

चित्र कला एवं शिल्प कला मानव की सृजनात्मक अभिव्यक्ति के महत्वपूर्ण माध्यम हैं, जो व्यक्ति के विचारों, भावनाओं, अनुभवों तथा कल्पनाओं को दृश्य एवं मूर्त रूप प्रदान करते हैं। कला का संबंध केवल सौंदर्य की अनुभूति से नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के मानसिक, भावनात्मक एवं सामाजिक विकास से भी जुड़ी हुई है। विद्यालयी शिक्षा में चित्र कला एवं शिल्प कला का विशेष महत्व है क्योंकि इनके माध्यम से विद्यार्थियों की रचनात्मक क्षमता, कल्पनाशक्ति तथा अभिव्यक्ति कौशल का विकास होता है।

चित्र कला दृश्य कला का एक प्रमुख रूप है, जिसमें रेखाओं, रंगों, आकृतियों एवं प्रतीकों के माध्यम से विचारों और भावनाओं को व्यक्त किया जाता है। चित्रकला विद्यार्थियों को अपने अनुभवों एवं कल्पनाओं को स्वतंत्र रूप से प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान करती है। इसके माध्यम से उनमें सौंदर्यबोध, अवलोकन क्षमता, एकाग्रता तथा सृजनात्मक चिंतन का विकास होता है। चित्र कला केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि आत्म–अभिव्यक्ति और संप्रेषण का प्रभावी माध्यम भी है।

शिल्प कला वह कला है जिसमें विभिन्न प्रकार की सामग्रियों – जैसे मिट्टी, लकड़ी, कागज, कपड़ा, धातु आदि–का उपयोग करके उपयोगी एवं कलात्मक वस्तुओं का निर्माण किया जाता है। यह कला

विद्यार्थियों में हस्तकौशल, कार्यकुशलता, धैर्य, अनुशासन तथा श्रम के प्रति सम्मान की भावना विकसित करती है। शिल्प कला सीखने की प्रक्रिया को अधिक अनुभवात्मक एवं व्यावहारिक बनाती है।

इस प्रकार, चित्र कला एवं शिल्प कला ऐसी शैक्षिक गतिविधियाँ हैं जो विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के बहुआयामी विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं तथा उन्हें सृजनशील, संवेदनशील एवं आत्मविश्वासी नागरिक बनने में सहायता प्रदान करती हैं।

आवश्यकता

माध्यमिक स्तर विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक तथा सामाजिक विकास का महत्वपूर्ण चरण होता है। इस अवस्था में विद्यार्थियों की कल्पनाशक्ति, जिज्ञासा, सृजनात्मकता तथा आत्म–अभिव्यक्ति की क्षमता तीव्र गति से विकसित होती है। अतः चित्र कला एवं शिल्प कला शिक्षा का समावेशन उनके सर्वांगीण विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। यह शिक्षा विद्यार्थियों को अपने विचारों, भावनाओं और अनुभवों को रचनात्मक ढंग से व्यक्त करने का अवसर प्रदान करती है, जिससे उनका आत्मविश्वास एवं व्यक्तित्व सुदृढ़ होता है।

चित्र कला एवं शिल्प कला विद्यार्थियों की सृजनात्मक सोच तथा नवाचार क्षमता को विकसित करती हैं। कला गतिविधियों के माध्यम से वे समस्याओं का समाधान खोजने, नए विचारों को अभिव्यक्त करने तथा विभिन्न दृष्टिकोणों से सोचने की क्षमता अर्जित करते हैं। साथ ही, ये कलाएँ विद्यार्थियों में सौंदर्यबोध एवं संवेदनशीलता का विकास करती हैं, जिससे वे अपने आसपास के प्राकृतिक एवं सामाजिक परिवेश को बेहतर ढंग से समझ पाते हैं।

माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों में भावनात्मक उतार–चढ़ाव सामान्य होते हैं। चित्रकला एवं शिल्प कला उन्हें अपनी भावनाओं को सकारात्मक रूप से व्यक्त करने का माध्यम प्रदान करती हैं, जिससे तनाव, चिंता एवं मानसिक दबाव को कम करने में सहायता मिलती है। इसके अतिरिक्त, समूह आधारित कला गतिविधियाँ सहयोग, नेतृत्व, संप्रेषण तथा सामाजिक समायोजन जैसे गुणों का विकास करती हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार कला शिक्षा अनुभवात्मक एवं कौशल–आधारित अधिगम को प्रोत्साहित करती है। शिल्प कला के माध्यम से विद्यार्थियों में हस्तकौशल, श्रम के प्रति सम्मान तथा आत्मनिर्भरता की भावना विकसित होती है। साथ ही, स्थानीय कला एवं शिल्प परंपराओं के अध्ययन से वे अपनी सांस्कृतिक विरासत से परिचित होते हैं और उसके संरक्षण के प्रति जागरूक बनते हैं।

अतः माध्यमिक स्तर पर चित्र कला एवं शिल्प कला शिक्षा की आवश्यकता केवल कलात्मक प्रतिभा के विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों के बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास का प्रभावी साधन है, जो उन्हें एक संवेदनशील, रचनात्मक एवं जिम्मेदार नागरिक बनने में सहायता प्रदान करती है।

महत्व

सर्वांगीण विकास में सहायकः चित्र कला एवं शिल्प कला विद्यार्थियों के बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक तथा शारीरिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इनके माध्यम से विद्यार्थियों की कल्पनाशक्ति, अवलोकन क्षमता तथा अभिव्यक्ति कौशल विकसित होते हैं। कला गतिविधियाँ विद्यार्थियों को आत्मविश्वास प्रदान करती हैं और उनके व्यक्तित्व को संतुलित बनाती हैं।

सृजनात्मकता का विकासः सृजनात्मकता शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य है। चित्र एवं शिल्प कला विद्यार्थियों को नए विचार उत्पन्न करने तथा उन्हें मूर्त रूप देने का अवसर प्रदान करती हैं। जब विद्यार्थी अपनी कल्पना के अनुसार चित्र बनाते हैं या शिल्प वस्तुएँ तैयार करते हैं, तब उनमें नवाचार एवं रचनात्मक सोच का विकास होता है।

आत्म–अभिव्यक्ति का माध्यमः कई बार विद्यार्थी अपने विचारों एवं भावनाओं को शब्दों में व्यक्त नहीं कर पाते। चित्र कला उन्हें रंगों एवं आकृतियों के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का अवसर प्रदान करती है। इससे उनकी भावनात्मक अभिव्यक्ति और आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।

सौंदर्यबोध का विकासः चित्र एवं शिल्प कला विद्यार्थियों में सौंदर्य के प्रति संवेदनशीलता विकसित करती हैं। वे रंगों, आकृतियों, अनुपात एवं संतुलन के महत्व को समझते हैं। इससे उनकी सौंदर्यपरक दृष्टि विकसित होती है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उपयोगी सिद्ध होती है।

हस्तकौशल एवं कार्यकुशलता का विकासः शिल्प कला के माध्यम से विद्यार्थियों के हाथों की सूक्ष्म गतियों का विकास होता है। वे विभिन्न सामग्रियों का उपयोग करना सीखते हैं तथा वस्तुओं के निर्माण की प्रक्रिया को समझते हैं। इससे उनकी कार्यकुशलता एवं व्यावहारिक दक्षता बढ़ती है।

समस्या समाधान क्षमता का विकासः चित्र एवं शिल्प कला गतिविधियों के दौरान विद्यार्थियों को विभिन्न चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। वे नई तकनीकों एवं उपायों का प्रयोग करते हैं। इससे उनमें समस्या समाधान क्षमता एवं तार्किक चिंतन का विकास होता है।

सांस्कृतिक संरक्षण एवं संवर्धनः भारतीय संस्कृति कला एवं शिल्प की समृद्ध परंपरा से परिपूर्ण है। विद्यालयों में चित्र एवं शिल्प कला के अध्ययन से विद्यार्थियों को अपनी सांस्कृतिक विरासत की जानकारी प्राप्त होती है। वे लोक कलाओं, हस्तशिल्पों एवं पारंपरिक कलात्मक विधाओं के महत्व को समझते हैं।

सामाजिक कौशल का विकासः कला गतिविधियाँ प्रायः समूहों में आयोजित की जाती हैं। इससे विद्यार्थियों में सहयोग, सहिष्णुता, नेतृत्व तथा सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित होती है। वे दूसरों के विचारों का सम्मान करना सीखते हैं।

मानसिक स्वास्थ्य का संवर्धनः कला गतिविधियाँ विद्यार्थियों के तनाव एवं चिंता को कम करने में सहायक होती हैं। चित्र बनाना, रंग भरना अथवा शिल्प वस्तुएँ तैयार करना मानसिक शांति एवं संतोष प्रदान करता है। इससे विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य बेहतर होता है।

रोजगारोन्मुखी शिक्षा का आधारः चित्र एवं शिल्प कला विद्यार्थियों को भविष्य में विभिन्न व्यावसायिक अवसरों के लिए तैयार करती हैं। फैशन डिजाइनिंग, ग्राफिक डिजाइनिंग, इंटीरियर डिजाइनिंग, एनिमेशन, हस्तशिल्प उद्योग आदि क्षेत्रों में कला कौशल की महत्वपूर्ण भूमिका है।

विश्लेषण

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत शिक्षा को केवल विषयगत ज्ञान तक सीमित न रखते हुए विद्यार्थियों के समग्र विकास पर विशेष बल दिया गया है। इस दृष्टिकोण से माध्यमिक स्तर के विद्यालयीय पाठ्यक्रम में चित्र कला एवं शिल्प कला शिक्षा का समावेशन अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। माध्यमिक स्तर वह अवस्था है जहाँ विद्यार्थियों की बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक तथा सृजनात्मक क्षमताओं का तीव्र

विकास होता है। अतः कला शिक्षा उनके व्यक्तित्व निर्माण तथा जीवनोपयोगी कौषलों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

चित्र कला एवं शिल्प कला शिक्षा विद्यार्थियों में सृजनात्मकता एवं कल्पनाशीलता का विकास करती है। कला के माध्यम से विद्यार्थी अपने विचारों, अनुभवों और भावनाओं को स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त कर सकते हैं। चित्र निर्माण, रेखांकन, रंग संयोजन तथा विभिन्न शिल्प गतिविधियों में भाग लेने से उनकी मौलिक सोच और नवाचार क्षमता का विकास होता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी विद्यार्थियों में रचनात्मक एवं आलोचनात्मक चिंतन विकसित करने पर बल देती है, जिसकी पूर्ति कला शिक्षा प्रभावी रूप से करती है।

माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रम में कला शिक्षा का समावेशन अनुभवात्मक अधिगम को भी प्रोत्साहित करता है। चित्रकला एवं शिल्प कला की गतिविधियाँ विद्यार्थियों को "करके सीखने" का अवसर प्रदान करती हैं। जब विद्यार्थी स्वयं कलाकृतियों का निर्माण करते हैं, तब वे केवल सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त नहीं करते, बल्कि व्यावहारिक अनुभवों के माध्यम से सीखते हैं। इससे अधिगम अधिक प्रभावी, स्थायी और रुचिकर बनता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी अनुभवात्मक एवं गतिविधि–आधारित शिक्षण को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है।

कला शिक्षा का समावेषन विद्यार्थियों के भावनात्मक विकास में भी सहायक होता है। किशोरावस्था में विद्यार्थियों को अनेक मानसिक एवं भावनात्मक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। चित्र कला एवं शिल्प कला उन्हें अपनी भावनाओं, चिंताओं तथा विचारों को सकारात्मक रूप से अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान करती हैं। इससे तनाव कम होता है तथा आत्मविश्वास एवं आत्मसम्मान में वृद्धि होती है। कला विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

सामाजिक दृष्टि से भी कला शिक्षा अत्यंत उपयोगी है। समूह आधारित कला गतिविधियों, प्रदर्शनियों तथा परियोजनाओं के माध्यम से विद्यार्थियों में सहयोग, नेतृत्व, संप्रेषण एवं सामूहिक कार्य करने की क्षमता विकसित होती है। वे विभिन्न संस्कृतियों, परंपराओं तथा विचारों का सम्मान करना सीखते हैं। इस प्रकार कला शिक्षा सामाजिक समरसता एवं लोकतांत्रिक मूल्यों को बढ़ावा देती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय संस्कृति, कला एवं विरासत के संरक्षण पर विशेष बल देती है। चित्र कला एवं शिल्प कला शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों को भारतीय लोककला, हस्तशिल्प, पारंपरिक चित्रकलाओं तथा स्थानीय कला परंपराओं से परिचित कराया जा सकता है। इससे उनमें सांस्कृतिक गौरव, राष्ट्रीय चेतना तथा अपनी विरासत के प्रति सम्मान की भावना विकसित होती है। साथ ही, स्थानीय कलाकारों एवं शिल्पकारों के योगदान को समझने का अवसर भी प्राप्त होता है।

शिल्प कला शिक्षा विद्यार्थियों में व्यावसायिक एवं उद्यमशील कौशलों का विकास भी करती है। हस्तनिर्मित वस्तुओं के निर्माण, डिजाइनिंग तथा रचनात्मक कार्यों के माध्यम से विद्यार्थी भविष्य में रोजगार एवं स्वरोजगार के अवसरों से जुड़ सकते हैं। यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के कौशल–आधारित एवं आत्मनिर्भर भारत के दृष्टिकोण के अनुरूप है।

इसके अतिरिक्त, कला शिक्षा पर्यावरणीय जागरूकता को भी बढ़ावा देती है। शिल्प कार्यों में पुनर्चक्रण योग्य एवं स्थानीय सामग्रियों का उपयोग विद्यार्थियों में पर्यावरण संरक्षण की भावना विकसित करता है। वे संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग तथा सतत विकास के महत्व को समझते हैं।

इस प्रकार माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रम में चित्र कला एवं शिल्प कला शिक्षा का समावेशन केवल एक सहगामी गतिविधि नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का प्रभावी माध्यम है। यह उनकी सृजनात्मकता, आत्मविश्वास, सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक कौशल, व्यावसायिक दक्षता तथा जीवन–कौशलों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए कला शिक्षा को विद्यालयी पाठ्यक्रम का अभिन्न एवं सशक्त अंग बनाया जाना समय की महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

चुनौतियाँ

माध्यमिक स्तर पर चित्र कला एवं शिल्प कला शिक्षा के प्रभावी क्रियान्वयन में अनेक चुनौतियाँ सामने आती हैं। यद्यपि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 कला–एकीकृत एवं अनुभवात्मक अधिगम पर बल देती है, फिर भी विद्यालयी स्तर पर इसके सफल कार्यान्वयन में विभिन्न संरचनात्मक, प्रशासनिक एवं सामाजिक चुनौतियाँ निम्नवत हैं –

प्रशिक्षित कला शिक्षकों की कमीः कई विद्यालयों में चित्र कला एवं शिल्प कला के लिए विशेषज्ञ शिक्षकों का अभाव है। परिणामस्वरूप कला शिक्षा को अन्य विषयों के शिक्षकों द्वारा संचालित किया जाता है, जिससे गुणवत्तापूर्ण शिक्षण प्रभावित होता है।

संसाधनों एवं आधारभूत सुविधाओं का अभावः ग्रामीण एवं सरकारी विद्यालयों में चित्रकला एवं शिल्पकला के लिए आवश्यक सामग्री, उपकरण, कार्यशाला कक्ष तथा प्रदर्शन स्थल पर्याप्त रूप से उपलब्ध नहीं होते। इससे विद्यार्थियों को व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करने में कठिनाई होती है।

परीक्षा–केंद्रित शिक्षा प्रणालीः विद्यालयी शिक्षा में अकादमिक विशयों को अधिक महत्व दिया जाता है। कला विषयों को अक्सर सहायक गतिविधि मान लिया जाता है, जिसके कारण विद्यार्थी एवं अभिभावक इन्हें गंभीरता से नहीं लेते।

समय एवं पाठ्यक्रम का दबावः माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों को अनेक विषयों का अध्ययन करना होता है। सीमित समय–सारणी के कारण कला गतिविधियों के लिए पर्याप्त समय नहीं मिल पाता।

सामाजिक दृष्टिकोण एवं जागरूकता की कमीः समाज के कुछ वर्गों में कला शिक्षा को रोजगार से सीधे न जुड़ा मानकर कम महत्व दिया जाता है। इससे कला विषयों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित नहीं हो पाता।

कला–एकीकृत शिक्षण का अपर्याप्त प्रशिक्षणः राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 कला–एकीकृत अधिगम पर बल देती है, किंतु अधिकांष शिक्षकों को इस पद्धति के प्रभावी उपयोग का पर्याप्त प्रशिक्षण नहीं मिला है।

मूल्यांकन संबंधी कठिनाइयाँः कला शिक्षा में सृजनात्मकता और प्रक्रिया दोनों महत्वपूर्ण होती हैं, किंतु विद्यालयों में प्रायः अंतिम उत्पाद के आधार पर मूल्यांकन किया जाता है, जिससे विद्यार्थियों की वास्तविक कलात्मक क्षमता का समुचित आकलन नहीं हो पाता।

डिजिटल एवं तकनीकी संसाधनों की सीमित उपलब्धताः आधुनिक कला शिक्षा में डिजिटल डिजाइन, ग्राफिक्स एवं मल्टीमीडिया का महत्व बढ़ रहा है, लेकिन अधिकांश विद्यालयों में इन सुविधाओं का अभाव है।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था को अधिक समावेशी, बहुआयामी, कौशल–आधारित तथा विद्यार्थी–केंद्रित बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। इस नीति का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करना है, जिसके अंतर्गत बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा सृजनात्मक क्षमताओं के विकास पर विशेष बल दिया गया है। इसी संदर्भ में माध्यमिक स्तर के विद्यालयीय पाठ्यक्रम में चित्र कला एवं शिल्प कला शिक्षा का समावेशन अत्यंत प्रासंगिक एवं आवश्यक सिद्ध होता है।

चित्र कला एवं शिल्प कला शिक्षा विद्यार्थियों को अपनी भावनाओं, विचारों एवं अनुभवों को रचनात्मक रूप से अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान करती है। यह शिक्षा न केवल उनकी सृजनात्मकता, कल्पनाशीलता और सौंदर्यबोध का विकास करती है, बल्कि आत्मविश्वास, आत्म–अनुशासन, सहयोग, नेतृत्व तथा समस्या–समाधान जैसे जीवनोपयोगी कौशलों को भी सुदृढ़ बनाती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा प्रतिपादित कला–एकीकृत अधिगम, अनुभवात्मक शिक्षण तथा बहुविषयक दृष्टिकोण के उद्देश्यों की प्राप्ति में चित्र कला एवं शिल्प कला महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

माध्यमिक स्तर पर कला शिक्षा का समावेशन विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति, परंपराओं एवं स्थानीय कला विरासत से जोड़ने का प्रभावी माध्यम है। इसके माध्यम से उनमें सांस्कृतिक चेतना, राष्ट्रीय गौरव तथा विविधता के प्रति सम्मान की भावना विकसित होती है। साथ ही, शिल्प कला शिक्षा विद्यार्थियों में हस्तकौशल, श्रम के प्रति सम्मान, उद्यमशीलता तथा आत्मनिर्भरता के गुणों का विकास करती है, जो वर्तमान समय की सामाजिक एवं आर्थिक आवश्यकताओं के अनुरूप हैं।

यद्यपि प्रशिक्षित कला शिक्षकों की कमी, संसाधनों का अभाव, परीक्षा–केंद्रित शिक्षा व्यवस्था तथा कला विषयों के प्रति सीमित जागरूकता जैसी चुनौतियाँ इसके प्रभावी क्रियान्वयन में बाधक हैं, फिर भी उचित नीतिगत समर्थन, शिक्षक प्रशिक्षण, संसाधनों की उपलब्धता तथा कला–एकीकृत शिक्षण पद्धतियों के माध्यम से इन चुनौतियों का समाधान संभव है।

अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में माध्यमिक स्तर के विद्यालयीय पाठ्यक्रम में चित्र कला एवं शिल्प कला शिक्षा का समावेषन केवल एक शैक्षिक आवश्यकता नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व विकास, सांस्कृतिक संरक्षण, कौशल संवर्धन तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लक्ष्यों की प्राप्ति का एक प्रभावी साधन है। यह शिक्षा एक सृजनशील, संवेदनशील, आत्मनिर्भर एवं जिम्मेदार नागरिक के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करती है।

सुझाव

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 विद्यार्थियों के समग्र विकास, सृजनात्मकता, कौशल विकास तथा अनुभवात्मक अधिगम पर विशेष बल देती है। इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए माध्यमिक स्तर पर चित्र कला एवं शिल्प कला शिक्षा का प्रभावी क्रियान्वयन आवश्यक है। इसके लिए निम्नलिखित सुझाव उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं–

- विद्यालयों में **प्रशिक्षित एवं योग्य कला शिक्षकों की नियुक्ति** सुनिश्चित की जानी चाहिए। कला शिक्षा की गुणवत्ता काफी हद तक शिक्षक की दक्षता पर निर्भर करती है। साथ ही, कार्यरत शिक्षकों

के लिए नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए ताकि वे कला–एकीकृत अधिगम की नवीन पद्धतियों से परिचित हो सकें।

- **विद्यालयों में कला एवं शिल्प प्रयोगशालाओं की स्थापना** की जानी चाहिए। चित्रकला एवं शिल्पकला के लिए आवश्यक सामग्री, उपकरण तथा कार्यस्थल उपलब्ध कराए जाने चाहिए ताकि विद्यार्थी व्यावहारिक रूप से सीख सकें। विशेष रूप से ग्रामीण विद्यालयों में संसाधनों की उपलब्धता पर ध्यान देना आवश्यक है।
- **कला–एकीकृत पाठ्यक्रम** विकसित किया जाना चाहिए, जिसमें चित्र कला एवं शिल्प कला को विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान तथा भाषा जैसे विषयों के साथ जोड़ा जाए। इससे शिक्षण अधिक रोचक, अनुभवात्मक एवं प्रभावी बनेगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी बहुविषयक एवं समग्र शिक्षा की वकालत करती है।
- विद्यार्थियों को **स्थानीय एवं पारंपरिक कला रूपों** से परिचित कराने हेतु स्थानीय कलाकारों एवं शिल्पकारों को विद्यालयी गतिविधियों से जोड़ा जाना चाहिए। इससे विद्यार्थियों में सांस्कृतिक चेतना तथा भारतीय कला विरासत के प्रति सम्मान विकसित होगा।
- विद्यालयों में नियमित रूप से **कला प्रदर्शनियाँ, प्रतियोगिताएँ, कार्यशालाएँ तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम** आयोजित किए जाने चाहिए। इससे विद्यार्थियों की रचनात्मक प्रतिभा को मंच मिलेगा तथा उनमें आत्मविश्वास का विकास होगा।
- **डिजिटल तकनीक** का उपयोग करते हुए डिजिटल आर्ट, ग्राफिक डिजाइन एवं अन्य आधुनिक कला माध्यमों को भी पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाना चाहिए। साथ ही, कला शिक्षा के मूल्यांकन में केवल अंतिम उत्पाद के स्थान पर सृजनात्मक प्रक्रिया, सहभागिता एवं मौलिकता को भी महत्व दिया जाना चाहिए।

सन्दर्भ

1. Anupama, C. S. (2024). Holistic approach of art education in the view of NEP 2020. International Journal of Management and Development Studies, 13(6), 51–53. https://doi.org/10.53983/IJMDS.V13N6.005
2. Bhuyan, P. (2025). Art education as a tool for multidisciplinary and experiential learning: Reflections on NEP 2020. International Journal for Multidimensional Research Perspectives, 3(9). https://doi.org/10.61877/IJMRP.V3I9.299
3. शर्मा, गुंजन, मित्तल, राधिका, एवं जायन. (2023) - Teacher education in India's National Education Policy 2020: Knowledge Traditions, Global Discourses and National Regulations : Contemporary Education Dialogue, 20(2). https://doi-org/10-1177/09731849231168728
4. Menon, S – (2024). Old, but not Stale : Revisiting the National Education Policy 2020- Contemporary Education Dialogue. 21(2). https://doi-org/10-1177/09731849241266101

5. मिश्रा, पूनम, एवं माथुर, ज्योति. (2024). विद्यालयी शिक्षा में बदलाव एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020- ShodhKosh : Journal of Visual and Performing Arts. 5(3). https://doi-org/10-29121/SHODHKOSH-V5-I3-2024-6186
6. मिश्रा, पूनम, एवं यादव, सुरमिला. (2024). नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं भारतीय शिक्षा के परम्परागत मूल्य - ShodhKosh : Journal of Visual and Performing Arts. 5(3). https://doi-org/10-29121/SHODHKOSH-V5-I3-2024-6185
7. Gupta, A. & Pal, S. (2023). National Education Policy 2020 and Teacher Responsibilities: An Analysis – ShodhKosh : Journal of Visual and Performing Arts. 4(2). https://doi-org/10-29121/SHODHKOSH-V4-I2-2023-5614
8. Alinje, R. (2021). Observing Silent, Smooth and Striated Space: The Case of Indian National Curriculum Policy 2009. Journal of Education Policy, 36(5). https://doi-org/10-1177/14782103211021025
9. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT), (2006). राष्ट्रीय फोकस समूह स्थिति पत्र– कला, संगीत, नृत्य एवं रंगमंच शिक्षा. नई दिल्ली– एनसीईआरटी।
10. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT) – (2023). Art Integrated Learning Guidelines for Secondary Stage. नई दिल्ली– एनसीईआरटी.
11. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. नई दिल्ली– शिक्षा मंत्रालय.
12. Eisner, E. W. (2002). The Arts and the Creation of Mind . Yale University Press.
13. Dewey, J. (1934). Art as Experience - New York : Minton. Balch & Company.
14. Gardner, H. (1993). Multiple Intelligences : The theory in Practice. Basic Books.
15. UNESCO. (2024). Framework for Culture and Arts Education. Paris : UNESCO.
16. NCF. (2023). National Curriculum Framework for School Education - New Delhi, Ministry of Education.
17. Contractor, M. (2023). Creative Drama and Puppetry in Education, New Delhi : National Book Trust of India.
18. NCERT. (2006). Arts Education Resource Book for Teachers. New Delhi : NCERT.
19. NCERT. (2011). Graphic Design Textbook . New Delhi : NCERT